हारयि न हम्मित बसिारयि न सांई राम
हारयि न हम्मित बसिारयि न सांई राम~~~

हारयि न हम्मित बसिारयि न सांई राम~~
तू क्यों सोचे बंदे सब की सोचे सांई राम~~~

दीपक ले के हाथ में सतगुरु राह दखिाये~~
पर मन मूरख बावरा आप अँधेरे जाए~~~

पाप पुण्य और भले बुरे की वो ही करता तोल~~
ये सौदे नहीं जगत हाट के तू क्या जाने मोल~~~

जैसा जसि का काम पाता वैसे दाम~~
तू क्यों सोचे बंदे सब की सोचे सांई राम~~